एटम बम

–अमृतलाल नागर

लेखक–परिचय

कहानी व उपन्यासकार अमृतलाल नागर का जन्म सन् 1916 ई. में एक गुजराती नागर परिवार में हुआ। अल्पायु में ही इन पर परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ आ पड़ीं जिसके कारण ये नियमित शिक्षण प्राप्त नहीं कर सके, परन्तु जीवन के अनुभवों से इन्होंने खूब सीखा। लोक–नाट्य, पुरातत्व, विभिन्न बोलियाँ और भाषाएँ इनकी रुचि के विशेष विषय रहे हैं। 'उच्छृंखल', 'चकल्लस', 'सनीचर' आदि कई हास्य रस के मासिक–पाक्षिक–साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं के ये सम्पादक भी रहे। नौकरी इनके लेखन में बाधा लगने लगी तो नागर जी ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लेखन की ओर प्रवृत्त हुये।

अमृतलाल नागर प्रगतिशील विचारों के साहित्यकार है। कहानियों के अतिरिक्त–उपन्यास, नाटक, फिल्म सिनेरियों, पेरोड़ी आदि लिखकर इन्होंने माँ भारती के भंडार को समृद्ध बनाया। 'महाकाल', 'ये कोठे वालियाँ', 'बूंद और समुद्र', 'सुहाग के नूपुर' तथा 'शतरंज के मोहरे' इनके प्रसिद्ध उपन्यास है। इनके नवीनतम उपन्यास 'अमृत और विष' पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कार देकर इन्हें सम्मानित किया है। 'एक दिन हजार दास्तां', 'एटम बम', 'पीपल की परी', 'वाटिका', 'अवशेष', 'नवाबी मसनद', 'तुलाराम शास्त्री' आदि इनके प्रसिद्ध कहानी–संग्रह है। नागर जी बंगला, मराठी और तमिल भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनसे सम्बन्धित कई हिन्दी अनुवाद भी नागर जी की साहित्य–सेवा के विशिष्ट अंग है।

पाठ–परिचय

'एटम बम' कहानी विज्ञान, युद्ध और शान्ति की त्रिवेणी पर आधारित मानवता के परिप्रेक्ष्य में समझने–परखने की कहानी है। आज विश्व का प्रत्येक मानव विज्ञान की उपलब्धियों को आशंका की दृष्टि से देखने लगा है क्योंकि विज्ञान के नित–नवीन आविष्कार मानव के लिए फूल की तरह जीवन को सौरभ ताजगी और प्रसन्नता देने वाला कम और वज्र की भाँति पीड़ाकारी और निर्मम अधिक हैं। युद्ध का अनिवार्य कारक बनकर वह मानवता को नष्ट करने पर उतारू है। जीवन की ममता और करूणा के स्त्रोत संकटग्रस्त हैं। इन्हीं संवेदनाओं को नागर जी ने कोबायाशी के अनुभूतिप्रवण हृदय द्वारा बार–बार उभारने का प्रयत्न किया है।

कहानी की पृष्ठभूमि द्वितीय विश्व युद्ध की वह विध्वंसकारी लीला है जिसमें हिरोशिमा और नागासाकी के लाखों निर्दोष प्राणियों का जीवन होम हो गया।

कहानी का अन्त आस्था और जीवन–शक्ति को वेग देने वाला है। नर्स के ये शब्द, 'एटम की शक्ति से हार कर क्या हम इन्सान और इन्सानियत को मरते देखते रहेंगे? विज्ञान की ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों

पर मानव की अदम्य प्राण–चेतना, असीम निर्माण शक्ति, अडिग आत्म–विश्वास और करुण भावना के विजय–चिन्ह हैं।

**** ****

चेतना लौटने लगी। साँस में गंधक की तरह तेज बदबूदार और दम घुटाने वाली हवा भरी हुई थी। कोबायाशी ने महसूस किया कि बम के उस घातक धड़ाके की गूँज अभी भी उसके दिल में धँस रही है। भय अभी भी उस पर छाया हुआ है। उसका दिल जोर–जोर से धड़क रहा है। उसे साँस लेने में तकलीफ होती है, उसकी साँस बहुत भारी और धीमी चल रही है।

हारे हुये कोबायाशी का जर्जर मन इन दोनों अनुभवों से खीझकर कराह उठा। उसका दिल फिर गफलत में डूबने लगा। होश में आने के बाद, मृत्यु के पंजे से छूट कर निकल जाने पर जो जीवनदायिनी स्फूर्ति और शान्ति उसे मिलनी चाहिये थी, उसके विपरीत यह अनुभव होने से ऊबकर, तन और मन की सारी कमजोरी के साथ वह चिढ़ उठा। जीवन कोबायाशी के शरीर में अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए विद्रोह करने लगा। उसमें बल का संचार हुआ।

कोबायाशी ने आँखें खोली। गहरे कुहासे की तरह दम घुटने वाला जहरीला धुआँ हर तरफ छाया हुआ था। उसके स्पर्श से कोबायाशी को अपने रोम–रोम में हजारों सुईयाँ चुभने का–सा अनुभव हो रहा था। रोम–रोम से चिनगारियाँ छूट रही थीं। उसकी आँखों में भी जलन होने लगी, पानी आ गया। कोबायाशी ने घबराकर आँखें मींच लीं।

लेकिन आँखें बन्द कर लेने से तो और भी ज्यादा दम घुटता है। कोबायाशी के प्राण घबरा उठे। वे कहीं भी सुरक्षित न थे। मौत अँधेरे की तरह उस पर छाने लगी। यह हीनावस्था की पराकाष्ठा थी। कोबायाशी की आत्मा रो उठी। हारकर उसने फिर अपनी आँखें खोल दीं। हठ के साथ वह उन्हें खोले ही रहा। जहरीला धुआँ लाल मिर्च के पाउडर की तरह उसकी आँखों में भर रहा था। लाख तकलीफ हो; मगर वह दुनियाँ को कम से कम देख तो रहा है। बम गिरने के बाद भी दुनियाँ अभी नेस्तनाबूद नहीं हुई आँखें खुली रहने पर यह तसल्ली तो उसे हो रही है। गर्दन घुमाकर उसने हिरोशिमा की धरती को देखा, जिस पर वह पड़ा हुआ था। धरती के लिए उसके मन में ममत्व जाग उठा। कमजोर हाथ आप ही आप आगे बढ़कर अपने नगर की मिट्टी को स्पर्श करने का सुख अनुभव करने लगे।

..... मन कहीं खोया। अपने अन्दर उसे किसी जबरदस्त कमी का एहसास हुआ। यह एहसास बढ़ता ही गया। आन्तरिक हृदय से सुख का अनुभव करते ही कल्पना दुःख की ओर प्रेरित हुई। स्मृति झकोले खाने लगी।

चेतन–बुद्धि पर छाये हुये भय से बचने के लिए अन्तर–चेतना की किसी बात पर विस्मृति का मोटा पर्दा पड़ रहा था। मौत के चंगुल से छूटकर निकल आने पर, पार्थिवता की बोझ–स्वरूप धरती के स्पर्श से जीवन को स्पर्श करने का सुख उसे प्राप्त हुआ था। परन्तु भावना उत्पन्न होते ही उसके सुख में घुन लग गये। भय ने नींवें डगमगा दीं। अपनी अनास्था को दबाने के लिए वह बार–बार जमीन छूता था। अन्तर के अविश्वास को चमत्कार का रूप देते हुये, इस खुली जगह में पड़े रहने के बावजूद अपने जीवित बच जाने के बारे में उसे भगवान की लीला दिखाई देने लगी।

करुणा सोते की तरह दिल से फूट निकली। पराजय के आँसू इस तरह अपना रूप बदल कर दिल में घुमेड़े ले रहे थे। जहरीले धुएँ के कारण आँखों में भरे हुये पानी के साथ–साथ वे आँसू भी घुल–मिलकर गाल से ढुलकते हुये जमीन पर टपकने लगे।

बेहोश होने के कुछ मिनट पहले उसने जिस प्रलय को देखा था, उसकी विकरालता अपने पूरे वजन के साथ कोबायाशी की स्मृति पर आघात करके उसके टुकड़े–टुकड़े कर रही थी। वह ठीक–ठीक सोच नहीं पा रहा था कि जो दृश्य उसने देखा, वह सत्य था क्या? ..... धड़ाका! जड़ी बुखार की कँपकँपी की तरह जमीन काँप उठी थी। बम था– दुश्मनों का हवाई हमला। हजारों लोग अपने प्राणों की पूरी शक्ति लगा कर चीख उठे थे। ..... कहाँ है वे लोग? वो प्राणान्तक चीखें, वह आर्तनाद जो बम के धड़ाके से भी ऊँचा उठ रहा था। वह इस समय कहाँ है? खुद वह इस समय कहाँ है? और ....

कुछ खो देने का अहसास फिर हुआ। कोबायाशी विचलित हुआ। उसने कराहते हुए करवट बदल कर उठने की कोशिश की, लेकिन उसमें हिलने की भी ताब न थी। उसने फिर अपनी गर्दन जमीन पर डाल दी। हवा में काले–काले जर्रे भरे हुये थे। धुआँ, गर्मी, जलन, प्यास– उसका हलक सूखा जा रहा था। बेचैनी बढ़ रही थी। वह उठना चाहता था। उठकर वह चारों तरफ देखना चाहता था! क्या ? यह अस्पष्ट था। उसके दिमाग में एक दुनियाँ चक्कर काट रही थी। नगर, इमारतें, जन–समूह से भरी हुई सड़कें, आती–जाती सवारियाँ, मोटरें, गाडियाँ, साइकिलें ..... और ..... दिमाग इन सभी में खोया हुआ कुछ ढूँढ रहा था; अटका, मगर फौरन ही बढ़ गया। जीवन के पच्चीस वर्ष जिस वातावरण से आत्मवत् परिचित और घनिष्ठ रहे थे, वह उसके दिमाग की स्क्रीन पर चलती–फिरती तस्वीरों की तरह प्रकट हो रहा था। लेकिन सब कुछ अस्पष्ट, मिटा–मिटा सा! कल्पना में वे चित्र बड़ी तेजी के साथ झलक दिखाकर बिखर जाते थे। इससे कोबायाशी का मन और भी उद्विग्न हो उठा।

प्यास बढ़ रही थी। हलक में काँटे पड़ गये। और उसमें उठने की ताब न थी। एक बूँद पानी के लिये जिन्दगी देह को छोड़कर चले जाने की धमकी दे रही थी, और शरीर फिर नहीं उठ पाता था। कोबायाशी को इस वक्त मौत ही भली लगी। बड़े दर्द के साथ उसने आँखें बन्द कर लीं।

मगर मौत न आयी।

कोबायाशी सोच रहा था। ''मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया था जिसकी यह सजा मुझे मिल रही है? अमीरों और अफसरों को छोड़कर कौन ऐसा आदमी था जो यह लड़ाई चाहता था? दुनियाँ अगर दुश्मनी निकालती, तो उन लोगों से। हमने उनका क्या बिगाडा था? हमें क्यों मारा गया? ..... प्यास लग रही है। पानी न मिलेगा। ऐसी बुरी मौत मुझे क्यों मिल रही है ? ईश्वर! मैनें ऐसा क्या अपराध किया था?''

करुणासागर ईश्वर कोबायाशी के दिल में उमड़ने लगा। आँखों से गंगा–जमुना बहने लगी। सबसे बड़े मुंसिफ के हुजूर में लाठी और भैंस वाले न्याय के विरुद्ध वह रो–रोकर फरियाद कर रहा था। आँसू हलकान किये दे रहे थे। लम्बी–लम्बी हिचकियाँ बँध रही थीं, जिनसे पसलियों को और सारे शरीर को बार–बार झटके लग रहे थे। इस तरह रोने से दम घोंटने वाला जहरीला धुआँ जल्दी–जल्दी पेट में जाता था। उसका जी मिचलाने लगा। उसके प्राण अटकने लगे।

प्राणों के भय से एक लम्बी हिचकी को रोकते हुये जो साँस खींची तो कई पल तक वह उसे अन्दर ही रोके रहा फिर सुबकियों में वह धीरे–धीरे टूटी। रो भी नहीं सकता। कोबायाशी की आँखों में फिर पानी भर आया। कमजोर हाथ उठाकर उसने बेजान–सी उँगलियों से आँसू पौंछे।

आँखों के पानी से उँगलियों के दो पोर गीले हुये, उतनी जगह में तरावट आयी। कोबायाशी की काँटों में पड़ी जबान और हलक को फिर से तरावट की तलब हुई। प्यास बगूले–सी फिर भड़क उठी। हठात् उसने अपनी आँसुओं से नम उँगलियाँ जबान से चाट लीं। दो उँगलियों के बीच में बिखरी हुई

आँसुओं की एक बूँद, उसकी जबान का जायका बदल गया और उसे पछतावा होने लगा– इतनी देर रोया, मगर बेकार ही गया। उसकी फिर से रोने की तबीयत होने लगी, मगर आँसू अब न निकलते थे। कोबायाशी के दोनों हाथों में ताकत आ गयी। नम आँखों से लेकर गीले गालों के पीछे कनपटियों तक आँसू की एक बूँद जुटा कर अपनी प्यास बुझाने के लिए वह उँगलियाँ दौड़ाने लगा। आँसू खुश्क हो चले थे, और कोबायाशी की प्यास दम तोड़ रही थी।

चक्कर आने लगे। गफलत फिर बढ़ने लगी। बराबर सुन्न पड़ते जाने की चेतना अपनी हार पर बुरी तरह से चिढ़ उठी और उसकी चिढ़ विद्रोह में बदलती गयी। गुस्सा शक्ति बनकर उसके शरीर में दमकने लगा– काबू से बाहर होने लगा। माथे की नसें तड़कने लगी। वह एक–दम अपने काबू से बाहर हो गया। दोनों हाथ टेक कर उसने बड़े जोर के साथ उठने की कोशिश की। वह कुछ उठा भी। कमजोरी की वजह से माथे में फिर मूर्छा आने लगी। उसने संभाला– मन भी, तन भी। दोनों हाथ मजबूती से जमीन पर टेके रहा। हाँफते हुये मुँह से एक लम्बी साँस ली, और अपनी भुजाओं के बल पर घिसटकर कुछ और उठा। पीठ लगी तो घूमकर देखा–पीछे दीवार थी। उसने जिन्दगी की एक और निशानी देखी। कोबायाशी का हौंसला बढ़ा। मौत को पहली शिकस्त देकर पुरुषार्थ ने गर्व का बोध किया। परन्तु पीड़ा और जड़ता का जोर अभी भी कुछ कम न था। फिर भी उसे शान्ति मिली। दीवार की तरफ देखते ही ध्यान बदला। सिर उठाकर ऊँचे देखा, दीवार टूट गयी थी। उसे आश्चर्यमय प्रसन्नता हुई। दीवार से टूटा हुआ मलवा दूसरी तरफ गिरा था। भगवान ने उसकी कैसी रक्षा की। जीवन के प्रति फिर से आस्था उत्पन्न होने लगी। टूटी हुई दीवार की ऊँचाई के साथ–साथ उसका ध्यान और ऊँचा गया कि यह तो अस्पताल की दीवार है। अभी–अभी वह अपनी पत्नी को भर्ती कराके बाहर निकला था। सवेरे से उसे दर्द उठ रहे थे, नयी जिन्दगी आने को थी। पत्नी जिसे बच्चा होने वाला था..... डॉक्टर, नर्स, मरीजों के पलंग ..... डॉक्टर ने उससे कहा था– ''बाहर जाकर इन्तजार करो।'' वह फिर बाहर जाकर अस्पताल के नीचे ही कंकड़ों की कच्ची सड़क पर सिगरेट पीते हुए टहलने लगा था। आज उसने काम से छुट्टी ले रखी थी। वह बहुत खुश था– जब अचानक आसमान पर कानों के पर्दे फाड़ने वाला धमाका हुआ था। अंधा बना देने वाली तीव्र प्रकाश की किरणें कहीं से फटकर चारों तरफ बिखर गईं। पलक मारते ही काले धुँए की मोटी चादर बादलों से घिरे हुये आसमान पर तेजी से बिछती चली गयी। काले धुएँ की बरसात होने लगी। चमकते हुये विद्युत्कण सारे वातावरण में फैल गये थे। सारा शरीर झुलस गया; दम घुटने लगा था। सैंकड़ों चीखें एक साथ सुनाई दी थीं। इस अस्पताल से भी आयी होगी। दीवार उसी तरफ गिरी है और उन चीखों में उसकी पत्नी की चीख भी जरूर शामिल रही होगी..... कोबायाशी का दिल तड़प उठा। उसे अपनी पत्नी को देखने की तीव्र उत्कण्ठा हुई।

होश में आने के बाद पहली बार कोबायाशी को अपनी पत्नी का ध्यान आया था। बहुत देर से जिसकी स्मृति खोाई हुई थी, उसे पाकर कोबायाशी को एक पल के लिए राहत हुई। इससे उसकी उत्कण्ठा का वेग और भी तीव्र हो गया।

साल भर पहले उसने विवाह किया था। एक वर्ष का यह सुख उसके जीवन की अमूल्य निधि बन गया था। दुःख, यातना और संघर्ष के पिछले चौबीस वर्षों के मरुस्थल से जीवन में आज की यह महायंत्रणा जुड़कर सुख शान्ति के एक वर्ष को पानी की एक बूँद की तरह सोख गयी थी।

बचपन में ही उसके माँ–बाप मर गये थे। एक छोटा भाई था जिसके भरण–पोषण के लिये कोबायाशी को दस वर्ष की उम्र में ही बुजुर्गों की तरह मर्द बनना पड़ा था। दिन और रात जी तोड़कर मेहनत–मजदूरी की, उसे शहजादे की तरह पाल–पोसकर बड़ा किया। तीन बरस हुये, वह फौज में भरती

होकर चीन की लड़ाई पर चला गया और फिर कभी न लौटा।

अपने भाई को खोकर कोबायाशी जिन्दगी से ऊब गया था। जीवन से लड़ने के लिए उसे कहीं से प्रेरणा नहीं मिलती थी। वह निराश हो चुका था। बेवा मकान–मालकिन की लड़की उसके जीवन में नया रस ले आयी। उनका विवाह हुआ। ..... और आज उसके घर में एक नयी जिन्दगी आने वाली थी। आज सवेरे से ही वह बड़े जोश में था। उसके सारे जोश और उल्लास पर यह गाज गिरी। जहरीले धुएँ की तपिश ने उसके अन्तर तक को भून दिया था। वेदना असह्य हो गयी थी–और चेतना लुप्त हो गई।

अपनी पत्नी से मिलने के लिए कोबायाशी सब खोकर तड़प रहा था। वह जैसे बच गया वैसे ही भगवान ने शायद उसे भी बचा लिया हो। लेकिन दीवार तो इधर गिरी है! .... ''नहीं!''

..... कोबायाशी चीख उठा। होश में आने के बाद पहली बार उसका कण्ठ फूटा था। सारे शरीर में उत्तेजना की एक लहर दौड़ गयी। स्वर की तेजी से उसके सूखे हुये निष्प्राण कंठ में खराश पैदा हुई। प्यास फिर होश में आयी। कोबायाशी के लिये बैठा रहना असह्य हो गया। अन्दरूनी जोश का दौरा कमजोर शरीर को झिंझोड़कर उठाने लगा। दीवार का सहारा देकर वह अपने पागल जोश के साथ तेजी से उठा। वह दौड़ना चाहता था। दिमाग में दौड़ने की तेजी लिये हुए, कमजोर और डगमगाते हुये पैरों से वह धीरे–धीरे अस्पताल के फाटक की तरफ बढ़ा।

फाटक टूटकर गिर चुका था। अन्दर तलवा–मिट्टी जमीन की सतह से आ पड़ा था। कुछ नहीं–वीरान। जैसे यहाँ कभी कुछ बना ही न था। मिट्टी और खण्डहर। दूर–दूर तक वीरान–खाली। उसकी दुनियाँ नहीं है। वह दुनियाँ जो उसने पच्चीस बरसों से देखी समझी और बरती थी, आज उसे कहीं भी नहीं दिखाई पड़ती। सपने की तरह वह काफूर हो चुकी है।

मीलों तक फैली हुई वीरानी को देखकर वह अपने को भूल गया अपनी पत्नी को भूल गया। इस महाविनाश में विराट शून्य को देखकर उसका अपनापन उसी में विलीन हो गया। उसकी शक्ति उस महाशून्य में लय हो गयी। जीवन के विपरीत यह अनास्था उसे चिढ़ाने लगी। टूटी दीवार का सहारा छोड़कर वह बेतहाशा दौड़ पड़ा। वह जोर–जोर से चीख रहा था–''मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?'' –मीलों तक उजड़े हुये हिरोशिमा नगर के इस खण्डहर में लाखों निर्दोष प्राणियों की आत्मा बनकर पागल कोबायाशी चीख रहा था–''मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?''

कैम्प अस्पताल में हजारों जख्मी और पागल लाये जा रहे थे। डॉक्टरों को फुर्सत नहीं, नर्सों को आराम नहीं, लेकिन इलाज कुछ भी नहीं हो रहा था। क्या इलाज करें? चारों ओर चीख–चिल्लाहट, दर्द और यंत्रणा का हंगामा! ''गोरा दुश्मन! खुदा–दुश्मन! बादशाह–दुश्मन!'' पागलपन के उस शोर में हर तरफ अपने लिये दर्द था, अपने परिवार और बच्चों के लिये सवाल था, जिसकी यह सजा उन्हें मिली है और दुश्मनों के लिए नफरत थी, जिन्होंने बिना किसी अपराध के उनकी जान ली।

अस्पताल के बरामदे में एक मरीज दहन फाड़कर चिल्ला उठा–''मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?''

अस्पताल के इन्चार्ज डॉक्टर सुजुकी इन तमाम आवाजों के बीच में खोये हुये खड़े थे। वह हार चुके थे। कल से उन्हें नींद नहीं, आराम नहीं, भूख–प्यास नहीं। ये पागलों का शोर, दर्द, चीख, कराह। उनका दिल, दिमाग और जिस्म थक चुका था। अभी थोड़ी देर पहले उन्हें खबर मिली थी। नागासाकी पर भी एटम बम गिराया गया। वे इससे चिढ़ उठे थे। क्यों नहीं, बादशाह और वजीर हार मान लेते ? क्या अपनी झूठी शान के लिये वे जापान को तबाह कर देंगे ?

उन्हें दुश्मनों पर भी गुस्सा आ रहा था; इन्हें क्यों मारा गया ? ये किसी के दुश्मन नहीं थे। इन्हें

अपने लिये साम्राज्य की चाह न थी। अगर इनका अपराध है तो केवल यही कि ये अपने बादशाह के मजबूरन बनाये हुये गुलाम है, व्यक्ति की सत्ता के शिकार हैं। संस्कारों के गुलाम हैं। ..... दुश्मन इन्हें मार कर खुश हैं। जापान की निर्दोष और मूक जनता ने दुश्मनों का क्या बिगाड़ा था जो उन पर एटम बम बरसाये गये ? विज्ञान की नई खोज की शक्ति अजमाने के लिये उन्हें लाखों बेजबान बेगुनाहों की जान लेने का क्या अधिकार था ? क्या यह धर्म युद्ध है ?– सदादर्शों के लिये लड़ाई हो रही है ? एटम का विनाशकारी प्रयोग विश्व को स्वतन्त्र करने की योजना नहीं, उसे गुलाम बनाने की जिद है। ऐसी जिद है जो इन्सान को तबाह करके छोड़ेगी। ..... और इन्सानियत के दुश्मन कहते हैं' कि एटम का आविष्कार मानव–बुद्धि की सबसे बड़ी सफलता है।

नर्स आयी। उसने कहा– ''डॉक्टर, सेन्टर से खबर आयी है और नये मरीज भेजे जा रहे हैं।''

डॉक्टर सुजुकी के थके चेहरे पर सनक भरी सूखी हँसी दिखाई दी उन्होंने जवाब दिया– ''इन नये मरीजों के लिए नयी जिन्दगी कहाँ से लाऊँगा, नर्स ? विनाश–लोलुप स्वार्थी मनुष्य, शक्ति का प्रयोग भी नष्ट करने के लिए ही कर रहा है; फिर निर्माण का दूसरा जरिया ही क्या रहा ? फैंक दो उन जिन्दा लाशों को, हिरोशिमा की वीरान धरती पर–या तो उन्हें जहर दे दो। अस्पताल और डॉक्टरों का दुनिया में अब कोई काम नहीं रहा।''

नर्स के पास इन फिजूल बातों के लिए समय नहीं था। –नये मरीज आ रहे हैं, सैंकड़ो अस्पताल में पड़े हैं। वह डॉक्टर पर झुंझला उठी–''यह वक्त इन बातों का नहीं है डॉक्टर! हमें जिन्दगी को बचाना है। यह हमारा पेशा है, फर्ज़ है। एटम की शक्ति से हारकर क्या हम इन्सान की इन्सानियत को मरते हुए देखते रहेंगे? चलिये, आइये, मरीजों को इंजेक्शन लगाना है। आगे का काम करना है।

नर्स, डॉक्टर सुजुकी का हाथ पकड़कर तेजी से आगे बढ़ गयी।

शब्दार्थ–

पराकाष्ठा– चरम सीमा,	सोते–झरने,	आघात–चोट,	जर्रे– कण,
आर्तनाद– दुःख भरा स्वर,	हलक–गला,	उद्विग्न–व्याकुल,	तलब–इच्छा,
जायका–स्वाद,	गफलत–चेत या सुध का अभाव,		उत्कण्ठा–इच्छा,
विराट–विशाल,	लय–विलीन,	मूक–गूँगा,	तबाह–बर्बाद,
पेशा–रोजगार,	फर्ज़–कर्तव्य।		

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'मुझे क्यों मारा ? मुझे क्यों मारा ?' वह जोर–जोर से चीख रहा था। वह कौन था–
   (क) नर्स (ख) सुजुकी
   (ग) कोबायाशी (घ) कोई नहीं ( )
3. 'एटम बम' किस शहर पर गिराया गया था–
   (क) हिरोशिमा (ख) नागासाकी
   (ग) क व ख दोनों (घ) टोक्यो ( )
4. ''यह वक्त इन बातों का नहीं है..... हमें जिन्दगी को बचाना यह हमारा पेशा है, फर्ज़ है।'' यह किसने कहा–
   (क) नर्स ने (ख) डॉक्टर ने

(ग) कोबायाशी ने (घ) मरीज ने ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'एटम बम' कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
2. कोबायाशी हठ के साथ अपनी आँखें क्यों खोले रहा ?
3. अस्पताल के इंचार्ज डॉक्टर का क्या नाम था? वे क्यों हार चुके थे ?
4. कोबायाशी ने शहजादे की तरह पाल पोस कर किसे बड़ा किया ?
5. कोबायाशी ने अपनी प्यास बुझाने के लिए क्या किया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. चेतना लौटने के बाद कोबायाशी ने अपने चारों ओर किस प्रकार का वातावरण देखा ?
2. युद्ध के संबंध में कोबायाशी के विचार लिखिए।
3. सुजुकी ने युद्ध के विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए क्या कहा ?
4. अस्पताल की ध्वस्त दीवार के साथ कोबायाशी की कौनसी स्मृति जुड़ी थी ?
5. 'एटम बम' कहानी का उद्देश्य क्या है ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'हिरोशिमा दिवस' पर आप एक युद्ध विरोधी सभा की अध्यक्षता करते हुए किन विचारों को प्रकट करेंगे?
2. कहानी के आधार पर कोबायाशी का जीवन वृत्तान्त लिखिए।
3. कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

*****